रिकॉर्डः— देहली ॐ पिताश्री 8/1/63

बच्चे जानते हैं कि बाप एक्स्ट्रा आर्डिनरी है। अजीब है। बच्चे मूँझते होंगे, शिवबाबा इनके रथ में आते हैं, वो तो है सर्वशक्तिवान— इनमें वो कैसे आता होगा? बाबा को क्या फीलिंग होती होगी? कुछ भी नहीं। इसमें फीलिंग की तो बात ही नहीं। जिसमें आते हैं इनको कोई फीलिंग नहीं रहती है। जैसे किसका पति मर जाता है तो उनकी आत्मा को (बु)लाते हैं, तो ब्राह्मण को कुछ फीलिंग नहीं आती है। बहुत पितर बोलते हैं, ब्राह्मण खाते हैं। वो समझते हैं कि आए हैं। इसमें फीलिंग की कोई बात नहीं। यह तो टीचर रूप में बैठ पढ़ाते हैं। समझ में आता है— यह नई2 बातें सुनाना, (चि)त्र आदि बनवाना उनका ही काम है। यह(बाबा) तो कुछ नहीं जानते थे। हमेशा गुरू की महिमा की जाती है, जि(स)से सीखा जाता है। सिवाए एक के और किसकी महिमा नहीं है। बाप कहते हैं— मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। यह समझते हैं कि यह नया ज्ञान, नई बातें, मैं तो कुछ नहीं जानता था। वण्डरफुल नॉलेज है! बहुत तो समझेंगे, असम्भव है, जो मनुष्य में भगवान आए; क्योंकि बुद्धि में कृष्ण के लिए बैठा हुआ है। शिव तो निराकार है। उनके इतने मंदिर हैं। शिव जयन्ती मनाते हैं, तो जरूर किस तन में आए होंगे ना! नहीं तो इतने गोप—गोपियों को ज्ञान कैसे दिया? बुद्धि से काम लेना है। ज़रूर कोई रथ में आकर समझाया है। बाप खुद आकर डायरैक्ट बच्चों से बात करते हैं। शिवबाबा आते हैं तो इनको कोई तकलीफ़ नहीं होती। यह कोई जनावर नहीं, जिसमें 10 मण बोझा पड़ेगा तो बैठ जावेगा। नहीं। बाप खुद कहते हैं— मैं इनका आधार लेता हूँ। तुम समझेंगे, बाबा आया है। फीलिंग आती है, सन्नाटा हो जाता है; परन्तु इस(साकार) बाबा ने भी तो योग का अभ्यास किया है। योग में रहने से भी तो सन्नाटा होगा ना। तुम समझेंगे, शिवबाबा आया है, वो शान्ति का सागर है तो क्या हम मास्टर शान्ति के सागर नहीं बनते? तो बाप कहते हैं— मुझ परमपिता प० शिव को याद करो। शिव प० अलग है। हम आत्माएँ अलग हैं। यह नई बात है ना! विद्वान—पण्डितों ने तो कह दिया है— भगवान सर्वव्यापी है; परन्तु इ(स)से तो बात (मीठा) नहीं होता। आगे हम भी कहते थे— सर्वव्यापी। अब बाबा ने समझाया है, मैं सर्वव्यापी नहीं हूँ। 5000 बरस पहले भी मैं तुम्हारे इस तन में आया .... था और तुमको समझाया था; अब फिर तुमको बतलाते हैं— तुमने ऐसे2 जन्म लिया, तुम सूर्यवंशी थे, फिर चन्द्रवंशी में आए, तुम्हारे भी 84 जन्म हैं। बच्चों को झाड़ का नॉलेज भी दिया है। ड्रामा अथवा कल्पवृक्ष अरबों बरस का तो हो न सके। बाप आकर रॉंग को राइट कर समझाते हैं। आदि सनातन है ही देवी देवता धर्म। उनको 5000 बरस हुए। प्राचीन ते प्राचीन भारत है। भारत का प्राचीन राज्य योग मशहूर है। प्राचीन ते प्राचीन सो तो ज़रूर सतयुग में वा तो उनसे आगे संगम पर होना चाहिए। कोई भी शास्त्र में संगम की बात है नहीं। ज़रूर बाप संगम पर ही आवेगा पतित को पावन बनाने। यह है कल्याणकारी युग। तो यह बातें मनुष्यों को नई लगती हैं। बाप को अगर जानते तो उनके पास चले जाते। गाते भी हैं— कौन देश से आए, कौन देश है जाना। तो ज़रूर कोई देश है ना! निराकारी दुनिया है। देश में ज़रूर बहुत रहने वाले होंगे। ऐसे तो नहीं, ब्रह्म में लीन होंगे। कहते भी हैं, फलाणा स्वर्गवासी हुआ। स्वर्ग में तो राजाई है। स्वर्ग कहा ही जाता है देवताओं के राज्य को। कोई फिर कहते— हम ज्योत के टुकड़े हैं अथवा सागर के बुदबुदे हैं। अब सागर कहाँ, बुदबुदा कहाँ! अनेक मत—मतांतर हैं। ऐसे तो नहीं, कोई कहाँ, कोई कहाँ जावेगा। आते तो सभी एक ही देश से हैं। पहले—2 तो पूछना है— गीता का भगवान कौन था? उसने गीता से क्या स्थापना की? सारी .... मनुष्यों की इसमें है। श्री कृष्ण तो प्रिसेप्टर है नहीं। दूसरी बात, बाप कहते हैं— मैं इनमें आकर स्थापना और विनाश कराता हूँ। और कोई ऐसे कह न सके। हरेक अपना—2 धर्म स्थापन करने आते हैं, फिर आहिस्ते2 सभी को आना है। निराकारी दुनिया से आत्माओं का आना शुरू हो जाता है। क्राइस्ट आकर धर्म स्थापन करते हैं। उनके पीछे सभी को आना है। उनके धर्म की संख्या आ जाती है। पहले गुरूनानक आया, तब उनके इतने सिक्ख संख्या बढ़ी। पार्ट बजाने लिए ज़रूर आना ही पड़े। यह अनादि बना—बनाया ड्रामा है। यह बातें कोई लौकिक बाप अथवा गुरू ने नहीं समझाई हैं। यह तो पारलौकिक बाप समझाते हैं। बाप कहते हैं— मैं आता हूँ। इनका(की) सोल तो कह न सके। मैं इस साधारण तन का आधार लेता हूँ, जिसका नाम 'प्रजापिता' रखना पड़े। तुम हो ब्रह्मा मुखवंशावली। वो सभी हैं कुख वंशावली। यह (अधूरी मुरली)